ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 326-329

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नागार्जुन के काव्य में वर्णित लोकजीवन

मुकेश कुमार झा
असि0 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, देवेन्द्र पी.जी.कॉलेज बिल्थरा रोड,बलिया (उ0प्र0) भारत।

Received- 05.08.2020,Revised- 09.08.2020, Accepted-13.08.2020 E-mail: - santoshsrivastava9990@gmail.com

सारांश : आधुनिक हिंदी काव्य–जगत् के चेतना–क्षितिज पर जिस कवि व्यक्तित्व ने अपनी काव्य–प्रतिभा से हिंदी–साहित्य को अलं.त किया, वे निःसन्देह नागार्जुन ही हैं। नागार्जुन उन कवियों में से हैं, जिन्होंने रोटी, कपड़ा और मकान–जैसी बुनियादी चीजों के लिए आजीवन संघर्ष किया और उसी अनुभव को अपनी सर्जनात्मक मेधा से कविता का रूप दे दिया। यही कारण है कि उनकी कविता केवल भोगा हुआ यथार्थ नहीं बल्कि जीवन की उन कटु सच्चाईयों का पुलिंदा भी है जिससे एक आम आदमी रू–ब–रू होता है। अपनी एक कविता 'अकाल और उसके वाद' में वे लिखते हैं–

'कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास, कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त, कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।।"1

कुंजीभूत शब्द– काव्य जगत्, चेतना–क्षितिज, व्यक्तित्व, काव्य–प्रतिभा, निःसंदेह, अनुभव, सर्जनात्मक, पुलिंदा।

इस कविता की प्रथम दो पंक्तियों में नागार्जुन ने मानव जीवन की पीड़ा, दुःख, गरीबी, भूख का जो चित्रण किया है, वह मानवीय संवेदना के धरातल पर मनुष्य की चेतना को झकझोरता है। मानव–जीवन की इस त्रासदी का चित्रण अन्य कवियों ने भी किया है, परन्तु अगली तीन पंक्तियों में नागार्जुन ने मनुष्य के साथ पशु–पक्षियों एवं जीव–जंतुओं की बेचैनी को जिस तरह जिया है, वह किसी अन्य कवि की कल्पना से बाहर की चीज है। नागार्जुन संभवतः पहले ऐसे कवि है, जो पशु– पक्षिओं एवं जीव–जंतुओं पर कविता लिखने का रिस्क लेते हैं और उसमें सफलता भी प्राप्त करते हैं। कवि नागार्जुन ने कुछ ऐसे विषयों पर भी कविता लिखी हैं, जिन्हें जड़ीभूत सौन्दर्याभिरुचि के लोग बेचैन हो सकते हैं। उनकी एक कविता है 'पैने दाँतोंवाली' सूअर पर लिखी गई है–

'जमना किनारे, मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूप में, पसर कर लेटी है
पूरे बारह थनों वाली, छौनों को पिला रही दूध
यह भी तो मादरे हिंद की बेटी है।'

नागार्जुन की कविता स्वयं को कुंठा और अवसाद की आग में जलाकर लिखी गई है। वह संवेदना की धीमी आँच पर पकाई गई है। मानवीय मूल्यों के जितने प्रतिमान हो सकते हैं, सभी उनकी कविता में स्वाभाविक रूप से आ गए हैं। उनके काव्य में निम्न वर्ग के जीवन की विद्रूपताओं, सर्वहारा वर्ग की भूख और दरिद्रता के अलावा लोकजीवन की अछूती संवेदना मौजूद है। स्वयं नागार्जुन ने निम्न वर्ग की त्रासदी को भोगा है। वह स्वयं लिखते हैं–

'पैदा हुआ था मैं
दीन – हीन अपठित किसी कृषक कुल में,
आ रहा हूँ, पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से कवि ?
मैं रूपक हूँ दबी दूब का
हारा हुआ नहीं है कि चरने को दौड़ते।
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।'

प्रसिद्ध लेखक राधाकान्त भारती ने नागार्जुन की कविता में लोकजीवन की संवेदना के सम्बन्ध में लिखा है–'नागार्जुन की कविता में लोकजीवन और लोकमन के प्रति आत्मीयतापूर्ण भावों का उद्घाटन मिलता है। नागार्जुन की जीवन्त भाषा उनको जनता के बीच से ही उपलब्ध हुई है। धरती के प्रति पूजनीय भाव उनकी कविता की विशेषता है। लोकजीवन उनकी रचनात्मक्ता को स्वरूप प्रदान करते हैं।

नागार्जुन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे आज के समाज के जनकवि हैं। वे तीसरी दुनिया केपक्षधर हैं। नव धनाढ्य वर्ग की दुनिया से भिन्न एक समांतर दुनिया है, जहाँ मनुष्य अपने अस्तित्व की वास्तविक लड़ाई लड़ रहे हैं। कवि ने 'हरिजन' कहे जानेवाले मानवों के प्रति भी सहानुभूति प्रदर्शित की है। जातिवाद की भयंकर त्रासदी से भरी 'हरिजन गाथा' नागार्जुन की लंबी कविता है, जो बिहार के बेलछी काण्ड से संबंधित है। चमार टोली की रैदासी कुटिया के अधेड़ संत गरीबदास खदेरन की व्यथा–कथा इसमें है। सामंती तत्त्वों द्वारा हरिजन बस्ती के बच्चों को आग में झोंक देने पर कवि मानवीय दृष्टि से सोचते हैं–

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

तेरह के तेरह अभागे, अकिंचन मनु–पुत्र
जिंदा झोंक दिए गये हों, प्रचण्ड अग्नि की विकराल लपटों में साधन सम्पन्न ऊँची जातियों वाले, सौ–सौ मनु पुत्रों द्वारा।2

कवि नागार्जुन देश के किसानों और मजदूरों की स्थिति का वास्तविक अंकन हजार – हजार बाहोंवाली कविता–संग्रह में इस तरह करते हैं–

'बीज नहीं है, बैल नहीं है, बरखा बिन अकुलाते हैं,
नहर रेट बढ़ गया खेत में पानी नहीं पटाते हैं।
नहीं खेत से कनखा भर भी दाना उपजा पाते हैं,
पिछला कर्ज चुका न सके, साहू की झिड़की खाते हैं।''3

'देखना ओ गंगा मैया' कविता में कवि की लोकदृष्टि पुल पर गुजरनेवाली ट्रेन से यात्रियों द्वारा फेंके गए पैसे खोजते हुए मल्लाहों के नंग–धडंग बच्चों पर पड़ती है, जो गंगा का मंथन करके छोटे–छोटे सुख की तलाश करते हैं। यथा – 'मल्लाहों के नंग–धडंग छोकरे
दो–दो पैर, हाथ दो–दो, प्रवाह में खिसकती रेत की ले रहे टोह, बहुधा–अवतरित नारायण ओह, खोज रहे पानी में जाने कौस्तुभ मणि।'4

नागार्जुन ने नारी को भी लोकदृष्टि से देखा है। वे नारी को समानाधिकार देने के पक्ष में है। लेकिन कवि को अफसोस है कि आजादी की रजत–जयन्ती मनाए जाने की तैयारी चल रही है और अभी नारी के तन पर पूरे कपड़े भी नहीं हैं, जिससे वह अपनी लाज भी नहीं बचा सकती। ' 'घर से बाहर निकलेगी कैसे लजवंती' कविता में कवि ने महंगाई की मार से पीड़ित नारी का यथार्थ सामने प्रस्तुत किया है –

'फटे वस्त्र हैं, घर से बाहर निकलेगी कैसे लजवंती,
शर्म न आती, मना रहे हैं वे महंगाई की रजत जयंती।5

'प्यासी पथराई आँखें' संकलन में अन्तिम चार कविताएँ पुराणों की उपेक्षित नारियों पर हैं, जो उन पर किए अत्याचारों के सन्दर्भ में हमारी करुणा और संवेदना को गहराती हैं। 'शूर्पणखा', 'अहल्या', 'रेणुका, और 'शकुंतला' में कवि की हार्दिक संवेदना व्यक्त हुई है। 'शूर्पणखा' की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं– 'भाई ने लगाया था, दुश्मन के पीछे रिझा नहीं पाई वनवासी राम को, नाक कटवा के, आ गई वापस।'6 इसी प्रकार उनकी 'भिक्षुणी', 'चन्दना', 'पापाणी' आदि कविताएँ नारी के प्रति उनके मानवीय भाव – बोध को उजाकर करती हैं–

'लाख द्रौपदी मांग रही है चीर,
वासुदेव भगवान अप्रतिम आज
सौ–सौ टकुओंवाली मिलें हजार,
खुले, तभी होगा इनका उद्धार।'7

नागार्जुन ने जीवन में कभी समझौता नहीं किया। सच का समर्थन और गलत का विरोध पूरी हिम्मत के साथ किया। अपनी बेबाक कविता के कारण कई बार उन्हें जेल भी जाना पड़ा। अपने जनपद के ह्रदय की धड़कन और उसका परिवेश, अपनी–माटी की सोंधी गंध नागार्जुन की कविता में रची–बसी है । आजादी के बाद गाँवों के प्राइमरी स्कूल की जर्जर और दयनीय स्थिति शिक्षा मंत्रियों के होने वाले वातानुकूलित कक्षों में उपेक्षित रहती है। नागार्जुन इसको बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं–

'घुन खाए शहतीरों पर बारहखड़ी विधाता बांचे,
फटी भीत है, छत चूती है आले पर विसतुइया नाचे।
बरसा कर बेवस बच्चों पर मिनट–मिनट पर पाँच तमाचे,
इसी तरह दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के सांचे।।'8

नागार्जुन स्वाधीन भारत के क्रान्तदर्शी जनकवि हैं–तरल आवेगोंवाले, भावुक, स्वप्नदर्शी लेकिन संघर्षकर्मा। तभी तो कवि का अंतर्मन बोल उठा है–

'जनकवि हूँ, क्यों चाहूँगा मैं थूक तुम्हारी ?
श्रमिकों पर क्यों चलने दूं बंदूक तुम्हारी।'9

वस्तुतः नागार्जुन कर्म से कवि हैं। उन्हें किसी व्यवस्था और किसी शासन का डर नहीं है। उनकी कविता कबीर की तरह समय से संवाद करती है। कबीर की लुकाठी लिए वह समाज की विसंगतियों से लड़ने के लिए तनकर हिम्मत से खड़े रहे। उनकी कविता का विषय और भाषा–दोनों ही प्रवल हैं। कहीं कोई झोल नहीं है। साहित्य के सारे विशेषण और पुरस्कार नागार्जुन के लिए छोटे हैं। उनके लिए नये विशेषण गढ़ने की आवश्यकता है।

नागार्जुन की भाषा में भारत की सामान्य जनता की धड़कनों को आसानी से सुना जा सकता है। हर वर्ग के साथ उनका गहरा जुड़ाव है, वच्चे, बूढ़े, महिलाएँ, साहित्यकार, बुद्धिजीवी, गृहस्थ, व्यवसायी, नौकरी पेशावाले–सबके साथ उनका उठना–बैठना, खाना–पीना रहा है। बाहर से लेकर उनके ह्रदय तक उनकी गहरी पैठ है। इन्हीं लोगों के जीवनरस से नागार्जुन की सच्ची–खड़ी कविता उपजी है। जनसाधारण से इस जुड़ाव के कारण उनकी कविता में एक नितांत भिन्न जीवंत कलात्मक सौन्दर्य सृजित हुआ है, जो जीवन के स्पन्दनों के समान ही वास्तविक एवं तेजस्वी है। नागार्जुन की कविता में सीधे–सीधे कहने की अद्भुत ताकत है और इसी के बल पर जनता के बीच खड़े होकर वह अपनी बात वेझिझक रखते हैं–

'जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ!
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों कहलाऊँ!' 10

नागार्जुन प्रगतिशील जनकवि हैं। समाज की कौन–सी नस

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

कैसे फड़क रही है, वह इस बात को भली–भाँति जानते हैं। समाज में व्याप्त विसंगतियों के समानांतर स्थानीय नेताओं की राजनीतिक चालों की कलई ये बड़ी सतर्कता से खोलते हैं–

'लौटे हैं दिल्ली से कल टिकट मार के
खिले हैं दांत ज्यों दाने अनार के
आए दिन बहार के।'11

नागार्जुन मानवतावादी कवि हैं। उनमें समता की भावना कूट–कूटकर भरी हुई है। सामाजिक विषमता का वह जमकर विरोध करते है। ऊँच–नीच की भावना से समाज का सद्भाव नष्ट हो जाता है। सामाजिक भेदभाव से राष्ट्रीय एकता में बाधाएँ आती है। सामान्य जाति के लोग तथा नारियों को भी सम्मान की भावना से देखना जरूरी है। वे इसी बात के पक्षधर हैं। उनकी कविताओं में हमें यही सद्भाव दिखाई देता है–

'दूर होगा ब्राह्मण का दम्भ
शांत हो जाएगा राजन्य
वैश्य का लालच होगा नष्ट
शुद्ध होगा उन्नत स्वाधीन
स्त्रियाँ होगी पुरुषों तुल्य
बढ़ाएंगे बस गुण ही मूल्य।'12

आम आदमी के जीवन से जुड़े अनेक सामाजिक विम्ब प्रतिविम्ब नागार्जुन की कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। नागार्जुन ने आम आदमी की पीड़ा, दुःख आदि का चित्रण अत्यन्त प्रभावी ढंग से किया है। आज का आम आदमी अभाव में जी रहा है। उसकी आकुलता–व्याकुलता कवि के मन–मस्तिष्क को झकझोर देती है। समाज की स्थितियां आम आदमी को यह सोचने पर विवश कर देती है कि वह किस व्यवस्था में जी रहा है। क्या यही वह देश है जिसकी कल्पना हम लोगों ने की थी। उसे इस वातावरण में घुटन–सी महसूस होने लगती है। उसे लगता है मानो वह किसी यातनागृह में जिन्दगी का भार ढो रहा है। नागार्जुन ने आम आदमी की विवशता की मार्मिक अभिव्यक्ति की है, किन्तु इसके खिलाफ आवाज उठाने की भी प्रेरणा प्रदान की है–

'तब जर्जर है भूख प्यार से
व्यक्ति–व्यक्ति दुख–दैन्य ग्रस्त है
दुविधा में समुदाय पस्त है
लो मशाल अब घर–घर को आलोकित कर दो।
सेतु बनो प्रज्ञा–प्रयत्न के मध्य
शान्ति को सर्वमंगला हो जाने दो।''13

समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, भूख, अभाव, श्रम का शोषण, आर्थिक विषमता का चित्रण नागार्जुन की कविता में सटीक रूप से हुआ है। इस आर्थिक संवेदना को नागार्जुन ने अपनी कविताओं के माध्यम में व्यक्त किया है। स्वतंत्रताप्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी देश की अधिकांश जनता भूख से पीड़ित है। दो वक्त की रूखी–सूखी रोटी भी उसे नसीब नहीं होती। इसी के साथ पेयजल की समस्या भी बनी हुई है। जीवन की इस त्रासद स्थिति का चित्रण करते हुए नागार्जुन लिखते हैं–

'गोदामों में अन्न कैद है, पेट–पेट है खाली
भूख–पिशाचिन वजा रही है, द्वार–द्वार पर थाली।14

यह सच है कि भारत एक .षिप्रधान देश है, किन्तु भारतीय .षक की स्थिति काफी दयनीय है। महाजन और जमींदार उसका शोषण करते हैं। उससे सूद और लगान वसूल करते हैं। इसीलिए उसकी स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। उस पर हमेशा कर्ज का बोझ लदा होता है। वह कर्ज का बोझ लिए पैदा होता है, कर्ज का बोझ लिए जीता है और कर्ज का बोझ अपन बेटों के कंधों पर लादकर मर जाता है। अभाव में जीना उसकी निर्यात बन चुकी है। नागार्जुन भारतीय किसान की स्थिति का चित्रण करते हुए अपनी कविता में लिखत हैं–

'नहीं भूमि में कनमा भर भी दाना उपजा जाते हैं
पिछला कर्ज चुका न सके, साहू की झिड़की खाते हैं
उतना ही फसते, अपने को जितना अधिक बचाते हैं
भूखे रहकर, आधा खाकर दिन पर दिन दुबराते हैं।''15

डॉ० विजयवहादुर सिंह नागार्जुन को सर्वहारा वर्ग के प्रति प्रतिवद्ध कवि मानते हैं। उन्हीं के शब्दों में, 'यथार्थतः नागार्जुन के यहाँ निम्न वर्ग या समूचा सर्वहारा वर्ग कविता का नायक है। रिक्शा खींचनेवाला, चटकल में काम करनेवाला मजदूर, उच्च वर्ग का पुश्तैनी शिकार हरिजन और मछुआरा तथा महिला वर्ग जो वर्षों नहीं, शताब्दियों से भारतीय समाज की गुलामी करने को विवश है, नागार्जुन के चरित्र नायक। 'इसी वर्ग के शोषण को देखकर नागार्जुन प्रक्षोभित होते हैं और शोषकों पर तीव्रतम प्रहार करते हैं। निराला ने शोषक पूँजीपतियों को 'गुलाब' के रूप में देखा था तो नागार्जुन उन्हें 'धनपिशाच', 'कूबेर छौने', 'कुबेर शावक', 'धन कबेरों की जमात' आदि व्यंग्य विशेषणों से व्यञ्जित करते हैं।

वस्तुतः यह विडम्बना है कि जिस देश का घोष वाक्य 'सत्यमेव जयते' हो, उसी देश में सच बोलना अपराध बन गया है। कवि के शब्दों में–

'सपने में भी सच न बोलना वरना पकड़े जाओगे,
भैया, लखनऊ–दिल्ली पहुंचो मेवा–मिसरी पाओगे।
माल मिलेगा रेत सको यदि गला मजदूर–किसानों का
हर मर भुक्खों से क्या होगा चरण गहो श्रीमानों का।16

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

प्रतिहिंसा नागार्जुन की कविता का स्थायी भाव है–इसे वे स्वयं स्वीकार करते हैं और कहना न होगा कि यह स्वाभाविक ही है। नागार्जुन जैसा जनकवि अव्यवस्था, अराजकता, शोषण, अन्याय को कैसे स्वीकार कर सकता है। समाज की सड़ांध व्यवस्था के प्रति उनमें प्रतिहिंसा का भाव पैदा होता है। यह कहना कतई गलन नहीं होगा कि प्रनिशीलों में नागार्जुन एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने संघर्षों से सीखा है, संघर्षों की आँच में तपकर उनके विचार शब्दबद्ध हुए हैं। यही कारण है कि उनके लिए कलम भी हल और कुदाल से कम नहीं है–

मुझको भी मिली है प्रतिभा की प्रसादी
आटा, दाल, नमक, लकड़ी की जुगाड़ में।
अब कलम ही मेरा हल है, कुदाल है।

प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने नागार्जुन की काव्य–चेतना और उनकी जनवादी .ष्टि को रेखांकित करते हुए सही लिखा है– 'नागार्जुन मन–वचन–कर्म से जनवादी थे। जनवाद उनका बौद्धिक व्यसन नहीं था बल्कि भोगा हुआ जीवनदर्शन था। नागार्जुन अपनी व्यंग्य–रचनाओं के माध्यम से सामनेवालों को सिर्फ नंगा ही नहीं करते, चित्त भी कर देते हैं, पटकनी पर पटकनी देते चलते हैं। उनका व्यंग्य काव्य इस अर्थ में अद्वितीय है कि उपहास के तत्त्व उस पर हावी नहीं हो पाते। क्रोध अधिक सजग और लक्ष्यबद्ध होता चलता है। नागार्जुन जव वहुत गुस्से में होते हैं यानी कि विस्फोट की हद तक, तब व्यंग्य लिखते हैं। यही गुम्सा जव शान्त होता है, तब वे सामाजिक जीवन में धनपतियों, कुवेर के धनपिशाचों का हाल–चाल लेने निकल पड़ते हैं।17 भूदान कें असली स्वरूप को प्रकट करते समय उनके व्यंग्य की धार पैनी हो जाती है–

'बाँझ गाय बामन को दान हरगंगे
मन ही मन खुश हैं जजमान हरगंगे
ऊसर बंजर और श्मशान हरगंगे
संत विनोबा पावै दान हरगंगे।'18

इस कविता को ध्यान से देखने पर यह विदित होता है कि ऊपर से तथ्यात्मक विवरण–सी लगनेवाली पंक्तियों के अंदर व्यंग्य का मजबूत अंतःसूत्र विद्यमान है, जो उनकी कविता को कोरा नारेबाजी होने से बचा लेता है। व्यंग्य के सहारे बात कहनेवाले नागार्जुन की यह सबसे बड़ी खासियत है कि वह यह खतरा बार–बार उठाते हैं, जिसमें कविता मात्र प्रतिक्रिया न बनकर रह जाये। डॉ० नामवर सिंह ने नागार्जन के व्यंग्य–विधान पर विचार करते हुए यह घोषित किया है कि 'कवीर के बाद व्यंग्य को सार्थकता नागार्जुन ने ही प्रदान की है। व्यंग्य की विदग्धता ने ही नागार्जुन की अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया है, जिसके कारण वे कभी बासी नहीं हुई और अब भी तात्कालिक बनी हुई हैं। इसलिए यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नहीं हुआ।नागार्जुन के काव्य में व्यक्तियों के इतने व्यंग्य–चित्र हैं कि उनका एक विशाल एलबम तैयार किया जा सकता है।19

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि नागार्जुन अपने समय के ऐसे विरले और शायद अकेले ऐसे कवि हैं, जिसने जनवाणी का न सिर्फ आगाज किया, बल्कि जनचेतना की आशा–आकांक्षाओं के अनुरूप डटकर शोषण और दमन के खिलाफ लिखा। जाहिर है उन्हें अपनी इस शहादत की सजा भी भुगतनी पड़ी। उन्हें जेल की रोटियाँ भी तोड़नी पड़ी। परन्तु उनकी कविता का तेवर कभी मंद नहीं हुआ। आजन्म कलम के हल और कुदाल को लिए नागार्जुन परती धरती पर भी बीज उगाने का श्रम करते रहे। श्रमशील वर्ग की व्यथा–कथा को चित्रांकित करते रहे और यही सच्चे जनकवि की पहचान भी है। अतः धरती, जन और श्रम के गीत गानेवाले इस युग संवेदनशील कवियों में नागार्जुन का नाम सदैव अमर रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन, तालाब की माछलियों, पृ० 111.
2. नागार्जुन, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, पृ० 126.
3. नागार्जुन, हजार–हजार बाहोवाली, पृ0 59.
4. नागार्जुन सतरंगे पंखोंवाली, पृ० 21.
5. नागार्जुन, तुमने कहा था, पृ० 56.
6. नागार्जुन, प्यासी पथराई आखें, पृ० 61.
7. नागार्जुन, युगधारा, पृ0 7.
8. मास्टर', नागार्जुन रचनावली, भाग–1, पृ० 240.
9. नागार्जुन, खिचड़ी विप्लव देखा हमने
10. जनकवि', नागार्जुन रचनावली. भाग I, पृ० 93.
11. आए दिन बहार के', नागार्जुन रचनावली, भाग I, पृ० 123.
12. नागार्जुन, रलगर्भ, पृ० 14.
13. नागार्जुन, सतरंगे पंखोंवाली, पृ० 30.
14. नागार्जुन, पुरानी जूतियों का कोरस, पृ0 55.
15. नागार्जुन–रचनावली, खण्ड 2, संपादक शोभाकान्त, पृ० 230.
16. नागार्जुन–रचनावली, भाग 1, पृ० 10.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*